श्री सुमतिनाथ जिन पूजन

स्थापना

(सखी छंद)

हेनाथ सुमति के दाता, तव चरणन शीश नवाता ।
अब भाग्य उदय है आया, तव पूजन करने आया ।।1।।
प्रभु तीन लोक के स्वामी, मैं भटक रहा भवगामी।
इस भवसागर से तारो, दुखिया हूँ नाथ उबारो।।2।।
यह भक्त पुकारे आओ, प्रभु अब ना देर लगाओ।
मेरे मन मंदिर रहना, मुझको अब भगवन बनना।।3।।
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(तर्ज-पांचों मेरु.....)

गंगा जल सम नीर चढ़ाय, जन्म रोग का नाश कराय
सुमति दातार, हे जिनराज करो भव पार।।
जिन पूजा हैजग में सार, किया न अब तक आत्म विचार
सुमति दातार, हे जिनराज करो भव पार ।।1।।
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
भव आताप सहा नहीं जाय, नाशन हेतु चंदन लाय।
सुमति दातार, हे जिनराज करो भव पार।। जिन निर्वपामीति स्वाहा।।2।।
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा। ।
शुभ भावों के अक्षत लाय, पद अक्षय अनुपम प्रगटाय।
सुमति दातार, हे जिनराज करो भव पार।। जिन निर्वपामीति स्वाहा।।3।।
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
निज अखंड पद रूप अनूप, पाऊँ जिनवर ब्रह्म स्वरूप।
सुमति दातार, हे जिनराज करो भव पार।। जिन निर्वपामीति स्वाहा।।4।।
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
उत्तम संयम चरु सुहाय, क्षुधा रोग अविलम्ब नशाय।
सुमति दातार, हे जिनराज करो भव पार।। जिन निर्वपामीति स्वाहा।।5।।
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ज्ञान दीप अनमोल जलाय, मोह तिमिर अज्ञान मिटाय।
सुमति दातार, हे जिनराज करो भव पार।। जिन निर्वपामीति स्वाहा।।6।।
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
ध्यान अग्नि में कर्म जलाय, सिद्धालय का दर्श कराय।
सुमति दातार, हे जिनराज करो भव पार।। जिन निर्वपामीति स्वाहा।।7।।
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु भक्ति ही शिवफल दाय, भक्त प्रभुजी शीश नवाय।
सुमति दातार, हे जिनराज करो भव पार।। जिन निर्वपामीति स्वाहा।।8।।
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु पद का जो ध्यान लगाय, शिव अनमोल रतन शुभ पाय।
सुमति दातार, हे जिनराज करो भव पार।।
जिन पूजा है जग में सार, किया न अब तक आत्म विचार।

सुमति दातार, हे जिनराज करो भव पार ।।9।।
ऊँ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पंचकल्याणक
(सखी छंद)
श्रावण शुक्ला द्वितीया थी, माँ मंगला उर खुशियाँ थी।
प्रभु नगर अयोध्या आये, इंद्रादिक सुर मुस्काये ।।1।।
ऊँ हीं श्रावणशुक्लद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु जन्म लिया सुखदाता, एकादशी चौत्र कहाता।
शुभ स्वर्ण देह के धारी, हर्षित नगरी है सारी ।।2।।
ऊँ हीं चौत्रशुक्लएकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वैशाख शुक्ल नवमी को, सब त्याग दिये परिजन को।
जय सुमतिनाथ तीर्थंकर, हो प्राणिमात्र क्षेमंकर ।।3।।
ऊँ हीं वैशाखशुक्लनवम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जब प्रतिमा योग को धारा, अद्भुत प्रकाश उजियारा।
वे चौत्र सुदी ग्यारस थी, केवललक्ष्मी प्रगटी थी ।।4।।
ऊँ हीं चौत्रशुक्लएकादश्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्रायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जब ग्यारस चौत्र सुदी थी, तब पाई शिवलक्ष्मी थी।
प्रभु अचल हुए अविचल से, शुभ कूट सम्मेदाचल से ।।5।।
ऊँ हीं चौत्रशुक्लएकादश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जाप्य
ऊँ हीं अर्हं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।
जयमाला
दोहा
प्रभु क्षेत्र से दूर हूँ, रखना मेरा ध्यान।
शिव आलय में आ बसूँ, दो ऐसा वरदान ।1।।
(चौपाई)
हे पंचम तीर्थंश नमस्ते, गिरी शिखर से मुक्त नमस्ते ।
अरि नाशक अरहंतनमस्ते, वीतराग जिन संत नमस्ते ।।2।।
जन्म अयोध्या नगर नमस्ते, भव्य जीव आधार नमस्ते ।
पितु मेघप्रभ माँ मंगला से, जन्म लिया है प्रभु नमस्ते ।।3।।
दुखहारी सुखकार नमस्ते, त्रिभुवन पति हितकार नमस्ते।
सत्य तथ्य शिवकार नमस्ते, दोष अठारह मुक्त नमस्ते।।4।।
शील धर्म परिपूर्ण नमस्ते, भविजन पालक नाथ नमस्ते ।
एक शतक सोलह गणधर से, सुमतिनाथ जिनराय नमस्ते ।।5।।
पंचम गति आवास नमस्ते, चिदानंद चिद्रूपनमस्ते ।
राग-द्वेष से रहित नमस्ते, नंत गुणों से सहित नमस्ते।।6।।
भक्त करे त्रय योग नमस्ते, स्वीकारो जिनईश नमस्ते ।
पतित जनों के शरण नमस्ते, पावन शिवपुर पंथ नमस्ते ।।7।।
पद पूजित शत इंद्र नमस्ते, सुमति-सुमति दातार नमस्ते।
जन्म नमस्ते, मोक्ष नमस्ते, जिन जीवन है धन्य नमस्ते ।।8।।
मोक्ष कल्पतरु नाथ नमस्ते, कामधेनु चिन्मणी नमस्ते ।
ज्ञान सिंधु उत्तीर्ण नमस्ते, 'विद्यासागर पूर्ण' नमस्ते ।।9।।
दोहा

दुर्बुद्धि कुमति तजूँ, धरूँ सुमति सुखकार।
परमातम से मिलन हो, अर्पण गुणमणि हार ।।10।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
घत्ता
श्री सुमति जिनंदा, आनंद कंदा, भव-भव का संताप हरो।
निज पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।
।। इत्याशीर्वादः।।